COHERENCE – The Multidisciplinary Research Journal
Volume No: 15, Issue No: 1, Year: 2024 (January-June)
PP: 10-18
ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

चन्द्रकिशोर जायसवाल के उपन्यासों में राजनीतिक यथार्थ

पवन कुमार ठाकुर

शोधार्थी

(हिंदी विभाग, ललित नारायण मिथिला विश्वविद्यालय, दरभंगा)

सारांश :–

चन्द्रकिशोर जायसवाल के उपन्यासों में ग्रामीण क्षेत्रों का राजनीतिक यथार्थ बड़े ही यथार्थपरक ढंग से प्रस्तुत किया गया है। लेखक ने जीबछ बाबू जैसे पात्र के माध्यम से भ्रष्ट नेताओं का पर्दाफाश किया है। आज के नेता जनता के हितैषी और मसीहा बनने का ढोंग करते हैं, परंतु वास्तव में उनका लक्ष्य केवल सत्ता और संपत्ति अर्जित करना होता है। चुनाव से पूर्व वे जनता को प्रलोभन, वादों और सुविधाओं के माध्यम से प्रभावित करते हैं, किंतु सत्ता प्राप्त होते ही उनका ध्यान समाज-सेवा से हटकर निजी स्वार्थों पर केंद्रित हो जाता है। लेखक यह भी दर्शाते हैं कि भारत में नेता, गुंडों, पुलिस और प्रशासन के बीच मिलीभगत रहती है, जिससे आम जनता का जीवन असुरक्षित हो जाता है। सत्ता पाने और उसे बनाए रखने के लिए नेताओं द्वारा हिंसा, हत्या, बूथ लूटना, शराब पिलाना, धन एवं वस्त्र बाँटना और यहाँ तक कि कार्यकर्ताओं के मनोरंजन हेतु स्त्रियों का उपभोग तक किया जाता है। लेखक ने यह भी दिखाया है कि नेता सब चुनाव समय केवल शिलान्यास, झूठे आश्वासन देकर जनता को भ्रमित करते हैं और वोट पाने के लिए नकली रोजगार योजनाएँ और दिखावटी विकास कार्यों का सहारा लेते हैं। धीरे-धीरे जनता इन झूठे वादों को समझने लगी है और उनके प्रति असंतोष बढ़ रहा है। इस प्रकार चन्द्रकिशोर जायसवाल वर्तमान समय की राजनीति की सच्चाई और उसके विनाशकारी प्रभावों का यथार्थ चित्रण अपनी रचनाओं के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

बीज शब्द :– ग्रामीण, जीवन, राजनीतिक, भ्रष्ट, जनता, हितैषी, मसीहा, सत्ता, संपत्ति, प्रलोभन, सुविधाएँ, स्वार्थ, मिलीभगत, हिंसा, बूथ, लूटना, शिलान्यास, आश्वासन, रोजगार, विकास, शक्ति।

प्रस्तावना–

चन्द्रकिशोर जायसवाल के उपन्यासों में ग्रामीण जीवन का राजनीतिक यथार्थ अत्यंत बारीकी से प्रस्तुत किया गया है। स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद भारतीय राजनीति से जनता को बड़ी-बड़ी अपेक्षाएँ थीं। लोगों का विश्वास था कि अब देश से गरीबी, बेरोजगारी और सामाजिक असमानता जैसी समस्याएँ समाप्त हो जाएँगी तथा एक न्यायसंगत शासन व्यवस्था स्थापित होगी। किंतु

© Copyright @ Authors

वास्तविकता इसके ठीक विपरीत रही। गुलाबचंद यादव जी के शब्दों में "स्वंतत्रता प्राप्त करने के बाद भारत के राजनीतिक परिदृश्य में व्यापक परिवर्तन आये हैं। देश के आजाद होने पर भारतीय जनता को यह उम्मीद थी कि अब देश से गरीबी, भूखमरी और बेकारी दूर हो जाएगी और देश में समतामूलक एवं न्याय आधारित शासन व्यवस्था लागू होगी। किंतु वास्तविकता के धरातल पर जो परिदृश्य सामने आया उससे आम जनता की निराशा और बढ़ गई है। देश प्रेम और जातीय भावना के नाम पर आम जनता को दिग्भ्रमित कर राजनेता अपने स्वार्थों को पूरा करने में लगे हैं। चन्द्रकिशोर जायसवाल ने अपने उपन्यासों में इस राजनीतिक अवसरवादिता का पदार्फाश किया है। चाहे गाँधी जी को अपना आदर्श मानने वाले दल हों अथवा कार्ल मार्क्स के सिद्धांतों पर चलने का दम भरने वाले दल हों, श्री जायसवाल ने सभी दलों की स्वार्थलोलुपता और अवसरवादिता को उघाड़कर भारतीय ग्रामीण राजनीति का यथार्थपरक चित्रण किया है।"[1]

चन्द्रकिशोर जायसवाल ने अपनी लेखनी में वर्तमान समय की भ्रष्ट राजनीति का पर्दाफाश किया है। 'जीबछ का बेटा बुद्ध' उपन्यास में लेखक ने जीबछ बाबू के माध्यम से आज के नेताओं के दोहरे चरित्र को उजागर किया है। जायसवाल जी लिखते हैं- "तुमने इन मत्रियों के बारे में बहुत बार बहुत कुछ अखबारों में पढ़ा होगा। ये खबरे झूठी नहीं है। और जो सच है, वह उन सबसे अधिक घिनौना, अधिक विस्मयकारी, अधिक बदबूदार है। इसीलिए कोई मसीहा कहलाये जाने के लिए तरकीवे सोचता है और कोई किसी कमला-विमला को ढूँढ़ निकालता है दधीचि कहे जाने के लिए।"...सत्ता में बने रहने के लिए, जीवन में सफल होने के लिए, लाखों-करोड़ों पचा जाने के लिए। भेस से भीख मिलती है,...जनता को मसीहा चाहिये, दधीचि चाहिये, तो फिर क्या करे राजनेता-जननेता? उनके लिए जरुरी है भेस, बदलकर रहना। इन किताबों में जो कुछ लिखा है, सब झूठ है, सच एक भी नहीं। और ये किताबें जनता के लिए लिखी गयी है, जन-नेताओं के पुत्रों के लिए नहीं।"[2] इससे स्पष्ट होता है कि आज के नेता किस प्रकार जन-हितैषी बनने का ढोंग करके अपनी संपत्ति बनाने में लगे रहते हैं। सत्ता में आने से पहले वे अनेक प्रकार के वादे करते हैं, लेकिन सत्ता में पहुँचते ही अपने मत और उद्देश्य बदल लेते हैं।

जब नेता सत्ता में आते हैं तो समाज सेवा से पहले अपनी संपत्ति बनाने को प्राथमिकता देते हैं और फिर उसी संपत्ति का उपयोग दुबारा चुनाव लड़ने और सत्ता पाने के लिए करते हैं। इसी संदर्भ में लेखक लिखते हैं-"अगर मैं अपनी बखारी पर ध्यान नहीं देता, तो आज मंत्री क्या, एक विधायक तक नहीं हो पाता। अब कोई गाँधी बाबा गांव का मुखिया भी बनकर दिखा तो दे। अब हर धंधे में

[1] गुलाबचंद यादव-'लोकसंग्रही संचेतना और जन सरोकार के साहित्यकार चन्द्रकिशोर जायसवाल', पृष्ठ संख्या-96

[2] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'जीबछ का बेटा बुद्ध' पृष्ठ संख्या-83, प्रकाशक- कोसी प्रकाशन-गृह, बुद्ध कॉलोनी, दुजरा रोड पटना-80000, प्रथम संस्करण 1990.

© Copyright @ Authors

पैसे की जरूरत पड़ती है।"[3] यह राजनीति का यथार्थ है आज की राजनीति की वास्तविकता को उजागर करता है, जहाँ ईमानदारी की जगह बईमानी ने ले ली है। आज जनसेवा का स्थान स्वार्थ ने ले लिया है और राजनीति एक मिशन न होकर व्यवसाय बन गई है।

वतर्मान समय में सत्ता की भूख इतनी प्रबल हो चुकी है कि इंसानियत का ह्रास स्पष्ट दिखाई देता है। जीबछ बाबू एक शक्तिशाली, भ्रष्ट राजनेता हैं, वे अपने बेटे दीपक को भी उसी रास्ते पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं जब बेटा उनके राह पर नहीं चलता है तो दीपक को चेतावनी देते हैं कि यदि वह उनकी सत्ता और व्यवस्था के खिलाफ खड़ा होगा तो उसे गंभीर परिणाम भुगतने होंगे। जीबछ बाबू सत्ता बनाए रखने के लिए किसी भी हद तक जा सकते हैं, चाहे हत्या करवानी पड़े या अन्य अनैतिक कार्य करने पड़ें। उनके लिए सत्ता ही सर्वोपरि है। जायसवाल जी जीबछ बाबू पात्र के माध्यम से कहलवाते हैं-"मैं अपने विरुद्ध किसी भी विद्रोह को कुचलना जानता हूँ, कुचल दिया करता हूँ। जिस जमीन पर तुमने पुस्तकालय खोल रखा था, उस जमीन को हथियाने के लिए मुझे हत्या करवानी पड़ी थी। शक्ति और सत्ता के लिए मैंने हत्याएँ करवायी हैं..."[4] इससे पता चलता है कि सत्ता के लिए लोग किस हद तक गिर सकते हैं। जो लोग इस व्यवस्था का विरोध करते हैं, उन्हें अक्सर गंभीर और खतरनाक परिणाम भुगतने पड़ते हैं।

लेखक यह भी उजागर करते हैं कि किस प्रकार नेता जनता का शोषण करते हुए अपने स्वार्थ और सत्ता को बनाए रखने के लिए ढोंगी छवि का निर्माण करते हैं। चन्द्रकिशोर जायसवाल जी लिखते हैं- "इस मसीहा के पास कितनी कोठियाँ हैं और किन-किन शहरों में हैं। कितने कातिल और गुंडे उसकी कोठी में पनाह लेते हैं...कितना बड़ा हत्यारा है वह, कि कैसे जोंक की तरह जनता को चूस रहा है वह,...यह राधारमण।...यह वेदप्रकाश डकैतों का सरगना रह चुका है। कितनी ही कुँआरी लड़कियाँ उसके कारण कुओं- पोखरों में डूब मरी हैं। रामतेजा सिंह, जो एक जुलूस में पुलिस की गोली का शिकार हुआ था...।"[5] इससे साफ झलकता है कि सत्ताधारी नेता अपनी वास्तविकता को छिपाकर नैतिकता का मुखौटा पहनते हैं और जनता के विश्वास को छलते हैं। उनके लिए राजनीति जनसेवा का माध्यम न होकर सत्ता और सम्पत्ति अर्जित करने का साधन बन जाती है।

जीबछ बाबू जैसे नेताओं के लिए सत्ता और धन एकमात्र लक्ष्य हैं और इसके लिए वे अपने बच्चों को भी उसी राह पर चलने के लिए प्रेरित करते हैं। जायसवाल जी लिखते हैं- "मैं तुम्हारा पिता हूँ,"..."मुझे भी तुमसे मोह है, ममता है; मैं तुम्हें जीवन में सफल देखना चाहता हूँ। अगर तुम मेरी

---

[3] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'जीबछ का बेटा बुद्ध', पृष्ठ संख्या-**43**

[4] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'जीबछ का बेटा बुद्ध', पृष्ठ संख्या-**88**

[5] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'जीबछ का बेटा बुद्ध', पृष्ठ संख्या-**83**

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

बतायी राह पर चलते हो, तो मैं तुम्हारा कोई भी कुकर्म बरदाश्त कर लूँगा। तुम शराबी हो जाओ, तुम जुआड़ी हो जाओ, मैं जरा भी परवाह नहीं करूँगा, मगर यह नहीं होगा कि..."[6] वर्तमान सामाजिक और राजनीतिक स्थिति में शोषण, भ्रष्टाचार और नैतिकता का पतन व्यापक हो चुका है। जहाँ दीपक जैसे लोग सच्चाई और समाज सेवा का रास्ता चुनते हैं, वहीं जीबछ बाबू जैसे लोग समाज और राजनीति में व्याप्त अनैतिकता और भ्रष्टाचार को बढ़ावा देते हैं।

हमारे समाज में नेता चुनाव जीतने के लिए जनता की भलाई करने का दिखावा कर रहे हैं, जबकि उनका असली उद्देश्य अपने धन और संसाधनों की रक्षा करना है। जीबछ बाबू अपने बेटे दीपक को समाज सेवा से दूर रहने की सलाह देते हैं क्योंकि उनके अनुसार इसमें कोई आर्थिक या सामाजिक लाभ नहीं है। वे अपने बेटे को अपनी विचारधारा से प्रभावित कर यह सिखाना चाहते हैं कि राजनीति और समाज सेवा के नाम पर केवल वही कार्य करना चाहिए, जो उन्हें व्यक्तिगत रूप से लाभ पहुंचाए "मैं वहीं एक पैसे का दान करूँगा, जहाँ से मुझे चार पैसे वापस मिलेंगे।...मैंने जो धन जमा किया है उसकी रखवाली एक कुत्ते की तरह करूँगा।...परोपकार के लिए मैंने अपना खून-पसीना एक नहीं किया है।...बिना परोपकार किये ही मैं चुनाव जीत रहा हूँ"[7] जीबछ बाबू का कहने का आशय यह कि वे सत्ता और धन को बनाए रखने के लिए हर कदम उठाने के लिए तैयार हैं, भले ही इसके लिए उन्हें नैतिक मूल्यों का उल्लंघन क्यों न करना पड़े। यह बात चन्द्रकिशोर जायसवाल जी 1990 ई. में लिखते हैं लेकिन आज भी प्रासंगिक है।

भारत में पुलिस, सरकार और गुंडों के बीच एक गहरा गठजोड़ देखने को मिलता है। अपराध और दंगे अक्सर राजनीतिक लाभ के लिए उपयोग किए जाते हैं। सत्ता की रक्षा और चुनावी लाभ सुनिश्चित करने के लिए पुलिस अधिकारी, सत्ताधारी दल और अपराधी वर्ग आपसी मिलीभगत से काम करते हैं। चन्द्रकिशोर जायसवाल इस सच्चाई को उजागर करते हुए लिखते हैं- "जब गुंडे ही नहीं रहेंगे, तो चुनाव कैसे लड़ेंगे नेतावृंद? तब तो सारी की सारी जनता चली आयेगी वोट डालने। तब क्या होगा इन नेताओं का!"...सरकार चाहती ही नहीं कि दोषी व्यक्तियों के विरुद्ध धारा 153 ए के अन्तर्गत कोई कार्रवाई की जाय।...यहाँ सिर्फ गुंडे ही नहीं, विधायक भी गुंडागर्दी पर उतर आते हैं।...इस इलाके के ही दो विधायक ऐसे है, उनमें तो एक सरकार विरोधी दल का है, जिनके विरुद्ध पुलिस ने सरकार को खबर कर दी कि वे दोनों तनाव पैदा करने में लगे हुए हैं, और सरकार से उन्हें गिरफ्तार करने की अनुमति माँगी, मगर उधर से कोई जवाब ही नहीं आया।...हिम्मत है तो... जो लोग हमें दोषी करार रहे हैं, उनसे कहिये कि वे मैनापुर कब्रिस्तान की

[6] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'जीबछ का बेटा बुद्ध', पृष्ठ संख्या-**89**

[7] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'जीबछ का बेटा बुद्ध', पृष्ठ संख्या-**62**

© Copyright @ Authors

खुदाई करावें। वहाँ जमीन के अन्दर स्टेनगन, ए.के. 47 और हथगोले गड़े हुए हैं, इसकी पक्की खबर है हमें।...हिम्मत वाले हैं, तो आइये अपनी जनता के साथ, घेर लीजिये इस थाना को, और शोर मचाइये कि मैनापुर कब्रिस्तान की खुदाई हो।"[8] इस तरह सत्ता, पुलिस और गुंडों के बीच गठजोड़ आम जनता को असुरक्षा और भय में जीने के लिए विवश करता है। राजनीतिक दल जान-बूझकर ऐसे हालात को बढ़ावा देते हैं ताकि वोट-बैंक की राजनीति सुरक्षित रहे।

जब अपराधियों को समाज में सम्मान मिलने लगता है, तब पूरे समाज के नैतिक मूल्य गिरने लगते हैं। सही और गलत की पहचान धुंधली हो जाती है और ईमानदार, सच्चे लोगों के लिए कोई स्थान शेष नहीं रह जाता। ऐसे हालात में समाज का भविष्य अंधकारमय और असुरक्षित हो जाता है। इसी संदर्भ में चन्द्रकिशोर जायसवाल लिखते हैं-"दंगे के नेता अब शहर के नेता बने हुए हैं, सभा-मंचों को सुशोभित कर रहे हैं और जनता को साम्प्रदायिक सद्भाव की सीख देते हैं, पुलिस और प्रशासन पर हावी हैं। हत्यारे बेहिचक घूम रहे हैं; उन्हें सौंपी गयी है हत्यारों का पता लगाने की जिम्मेदारी। लुटेरे राहत कार्य में लगे हुए हैं।...गुंडों की सामाजिक प्रतिष्ठा बढ़ी है और वे सम्पन्न हो गये हैं।...शहर के शीर्षक की बात बराबर करते रहे हो... ऐसे शीर्षकों के रहते शहर के किस हाशिये में मेरी टिकान होगी?"[9] इससे साफ झलकता है जो लोग हिंसा, हत्या और लूट के प्रतीक हैं, वही नेता बनकर समाज का मार्गदर्शन करने लगते हैं। इस स्थिति में एक ईमानदार व्यक्ति के लिए इस समाज में कोई जगह नहीं बचती।

समाज में चुनावों के दौरान नेताओं का ध्यान दंगे, अपराध और जनता की वास्तविक समस्याओं की ओर नहीं जाता। उनका मुख्य उद्देश्य केवल चुनाव में टिकट प्राप्त करना और सत्ता हासिल करना रह गया है। जनता की समस्याएँ उनके लिए चुनावी समय में गौण हो जाती हैं और वे केवल अपने राजनीतिक स्वार्थ साधने में व्यस्त रहते हैं। जायसवाल जी लिखते हैं-"अब नेताओं और राजनीतिक दल वालों को फुर्सत कहाँ है,..."चुनाव सिर पर है। अब वे चुनाव के बारे में सोचें कि दंगों और हत्याओं को रोकने में अपना समय जाया करें! अभी मतदाताओं के पास जाने से क्या मिलेगा उन्हें? उन्होंने तो सोच लिया है कि पहले चुनाव में खड़ा होने के लिए टिकट तो मिल जाये,...बड़े-बड़े नेता भी तो अभी यहाँ के देहातों का दौरा करने की बजाय दिल्ली की दौड़ लगा रहे हैं।"[10] हमारे समाज में नेताओं का पहला और प्रमुख लक्ष्य सत्ता और पद प्राप्त करना ही रह गया है, न कि जनता की समस्याओं का समाधान करना।

---

[8]चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'शीर्षक', पृष्ठ संख्या-**65-66**,प्रकाशक: रचनाकार प्रकाशन', गुरुद्वारा मार्ग, पूर्णिया, प्रथम संस्करण : **1996**, आवरण : फ्रांसिस्को गोया

[9] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'शीर्षक', पृष्ठ संख्या-**194**

[10] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'शीर्षक', पृष्ठ संख्या-**74**

© Copyright @ Authors

चुनावी प्रक्रिया में किस प्रकार से मतदाताओं को प्रभावित करने और चुनाव जीतने के लिए धन, शराब, उपहार और अन्य अवैध साधनों का इस्तेमाल किया जाता है। यहाँ सत्ता पाने के लिए कानून की कोई परवाह नहीं की जाती। चुनाव जीतने के लिए मतदाताओं को खरीदा जाता है। गरीब मतदाताओं को धन, साड़ी-धोती अन्य सुविधाओं का प्रलोभन दिया जाता है ताकि वे मेरे पक्ष में वोट दें। यहाँ तह की चुनाव होने से पहले बूथ लूटने वाले पहले ही मेहनताना तय कर लेते हैं, इससे यह स्पष्ट होता है कि चुनावी प्रक्रिया में ईमादारी, निष्पक्षता का कोई स्थान नहीं है। इसी संदर्भ में एक कहावत याद आती है 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' यह कहावत इस स्थिति पर बिल्कुल सटीक बैठती है, क्योंकि जहाँ ताक़त का बोलबाला होता है, वहाँ न्याय और सच्चाई पीछे छूट जाते हैं। चन्द्रकिशोर जायसवाल जी लिखते हैं-"चुनाव जीतने के लिए मतदाताओं को जीतना पड़ता है।...गरीब मतदाताओं को थोड़ा अमीर बनाना पड़ता है, थोड़ी सुविधाएँ देनी होती हैं। आश्वासन बाँटने के बाद भी प्रत्याशी साड़ी-धोती बाँटते हैं, दारू पिलाते हैं, चापाकल लगवाते हैं, बाँस का पुल बनवा देते हैं या कुछ ऐसे ही दूसरे काम करते हैं। गाँव और टोला के मुखिया-मड़ड़ को नकदी मिलती है। बूथ लुटेरे भी पहले ही अपना मेहनताना तय कर लेते हैं। कार्यकर्ताओं और प्रचारकों को...पेटभत्ता पर काम करना पड़ रहा था।...वे दिन भर के थके माँदे वापस आते हैं, तो उन्हें कुछ मनोरंजन चाहिए।...जिस तरह चुनाव के अवसर पर हर प्रत्याशी चुनाव प्रचार के लिए साइकिल-मोटरसाइकिल और जीप कार खरीदता है, उसी तरह कार्यकर्ताओं और प्रचारकों के मनोरंजन के लिए कुछ नाच-गान में निपुण लड़कियाँ भी खरीद लायी जाती हैं; और जिस तरह चुनाव के समाप्त होते ही साइकिल-मोटरसाइकिल और जीप कार को औने-पौने दाम में बेच दिया जाता है, उसी तरह इन लड़कियों की भी बिक्री हो जाती है।"[11] लोकतंत्र का मूल उद्देश्य, जो कि जनता की भलाई और समाज की प्रगति होना चाहिए लेकिन उसे पूरी तरह से भुला दिया गया है। चुनाव जीतने के लिए अपनाए गए ये अवैध और अनैतिक साधन लोकतंत्र के सिद्धांतों का उपहास करते हैं। समाज में राजनीतिक यथार्थ यह है कि चुनावी प्रक्रिया में भ्रष्टाचार, अनैतिकता और शक्ति का दुरुपयोग हो रहा है। मतदाताओं को खरीदना, महिलाओं का शोषण और सत्ता पाने के लिए किसी भी हद तक जाना इस राजनीतिक तंत्र की विडंबना को दिखाता है।

चुनावी समय में नेता लोग प्रतीकात्मक कार्यों जैसे- शिलान्यास और स्मारक पत्थर गाड़ने आदि पर जोर देते हैं, लेकिन चुनाव के बाद इन कार्यों को पूरा करने या जनता की असली जरूरतों की परवाह नहीं करते। यह राजनीति की सतही और दिखावटी प्रवृत्ति को उजागर करता है, जहाँ वास्तविक विकास और समस्याओं के समाधान की जगह सिर्फ दिखावे और प्रचार पर ध्यान देते

---

[11] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे' पृष्ठ संख्या- **474**, प्रकाशक- भारतीय ज्ञानपीठ **18**, इंस्टीट्यूशन एरिया, लोदी रोड नई दिल्ली, पहला संस्करण: **2009**, दूसरा संस्करण: **2012**

© Copyright @ Authors

हैं। जायसवाल जी लिखते हैं- "चुनाव के समय तो नेतावृन्द स्मारकों के पत्थर गाड़ते ही रहते हैं। राजधानी से लेकर छोटे-छोटे कस्बों में चले जाइए, गली-गली में नेताजी के शिलान्यास मिल जाएँगे। फिर कभी नेताजी जानने की कोशिश भी करते हैं कि उन पत्थरों का क्या हुआ !"[12] सिर्फ चुनावी समय में दिखावे और वादों का खेल खेला जाता है, लेकिन चुनाव जीतने के बाद उन वादों को पूरा करने की कोई कोशिश नहीं होती। जनता की असली जरूरतों की उपेक्षा होती है और विकास कार्यों का स्थान पर केवल शिलान्यास और प्रचार करते हैं। ऐसे राजनीतिक यथार्थ में जनता का विश्वास नेताओं से टूटता है क्योंकि उनके वास्तविक मुद्दों पर ध्यान नहीं दिया जाता।

नेता लोग चुनाव के समय अपने समर्थकों को सभी प्रकार की सुविधाएँ देने का वादा करते हैं, ताकि उनका समर्थन सुनिश्चित हो सके। इसी संदर्भ में जायसवाल जी कहते हैं- "यह नहीं समझे कि विधायक बन जाने के बाद मैं...अकेले खाऊँगा। मैं सब का हिस्सा बराबर बाँटूँगा। जो आज मेरा साथ दे रहे हैं, मैं उनके सुख-दुख में उनका जीवन भर साथ दूँगा;...जब वे जेल में रहेंगे, तब भी उनके लिए लड़ूँगा; जब जेल से बाहर रहेंगे, तब भी उनके लिए मरुँगा।"[13] लेखक चुनावी प्रक्रिया में फैले भ्रष्टाचार और नैतिक पतन की ओर पाठकों का ध्यान आकर्षित करते हैं, जहाँ राजनीतिक सत्ता के लिए नैतिकता और सिद्धांतों का त्याग आम हो जाता है।

समाज में नेता लोग कैसे झूठे आश्वासन देकर जनता का वोट प्राप्त करने की कोशिश करते हैं। जैसे- "करैत पार्टी मतदान पूर्व ही हर घर को एक नौकरी देने जा रही है और नौकरियाँ बाँटने की कार्रवाई शुरु हो गयी है। कितने अच्छे दिन आ रहे थे कि हैं कि हर घर में महावार आएगा और पहली तारीख की खुशियाँ घर-घर आएँगी!"[14] लेकिन जब जनता नौकरियों की उम्मीद में आती है, तो कार्यकर्ताओं द्वारा एक नया बहाना बना दिया जाता है कि "चुनाव आयोग ने अभी नौकरी बाँटने पर आपत्ति जतायी है, इसीलिए अब नौकरी चुनाव के बाद मिलेगी।"[15]

इसी तरह धोखाधड़ी में-"सैकड़ों युवकों को फँस लिया उन्होंने। किसी से पाँच, किसी से दस और किसी से बीस हजार तक की रकम वसूली गयी नौकरी दिलाने का खर्च बताकर। और एक दिन दफ्तर के आगे ताला लटकाकर सब के सब चम्पत हो गये।"[16] इस घटना के बाद गाँव में हंगामा मच जाता है और लोग समझ जाते हैं कि नेताओं ने अभी से अपना असली रूप दिखाना शुरु कर

---

[12] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे' पृष्ठ संख्या- **497**

[13] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे' पृष्ठ संख्या- **487**

[14] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे' पृष्ठ संख्या- **488**

[15] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे' पृष्ठ संख्या- **490**

[16] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे' पृष्ठ संख्या- **491**

© Copyright @ Authors

ISSN: 0976-5301
Peer Reviewed & Refereed Journal (IF: 7.85)
Journal Website www.coherencejournal.in

दिया है। कार्यकर्ता जनता के बीच अपनी साख खो देते हैं और उनके खिलाफ गुस्सा बढ़ने लगता है।

अब धीरे-धीरे मतदान भी जागरूक होने लगे हैं, नेताओं के झूठे वादे पर विश्वास नहीं करते हैं, जनता धीरे धीरे जानने लगे हैं जो लेता चुनाव से पहले अपने लगते हैं, वही जीतने के बाद पराये हो जाते हैं। नेता न तो वादों को पूरा करते हैं और न ही दोबारा गाँव की सुध लेने आते हैं। चन्द्रकिशोर जायसवाल जी लिखते हैं- "पहली बार उन्होंने भी झूठे आश्वासन से ही काम चला लिया। दूसरे बार उन्होंने कहीं से मुक्त में मिल गयी हजार ईंटे गिरवा दीं और अगले पाँच साल तक देखने भी नहीं आये कि वे ईंटे मंदिर की नींव में गयीं या गिदनी के घरों या सड़कों में पिला दी गयीं। पिछली बार गिदनीवालों ने सुना दिया कि जब तक मंदिर नहीं बन जाता तब तक यहाँ के लोग मतदान नहीं करेंगे।"[17] जनता नेताओं की झूठी वादाखिलाफी से तंग आ चुकी है और अब नेताओं के खोखले वादों पर विश्वास नहीं करती।

ग्रामीण जीवन के राजनीतिक यथार्थ पर प्रकाश डालते हुए चन्द्रकिशोर जायसवाल यह स्पष्ट करते हैं कि राजनीति ने गाँव की सामूहिक एकता और शक्ति को खंडित कर दिया है। गाँव की सामूहिक ताकत, जो विकास और प्रगति का आधार बन सकती थी, वही अब टकराव और विभाजन का कारण बन रही है। इस संदर्भ में जायसवाल जी लिखते हैं-"यह गाँव गन्दी राजनीति का शिकार होकर बर्बाद हो रहा है। जो पूरे गाँव की ताकत थी, वह अब बँट-बिखर गयी है, और ये ताकतें आपस में ही टकराने को हैं। जिन ताकतों के सदुपयोग से गाँव का उत्थान हो सकता है, उन्हीं ताकतों के दुरुपयोग से इस गाँव का पतन होगा।"[18]

चन्द्रकिशोर जायसवाल अपने उपन्यासों में राजनीति की वास्तविक तस्वीर प्रस्तुत करते हैं। आज की राजनीति जनसेवा का माध्यम न होकर सत्ता, स्वार्थ और भ्रष्टाचार का साधन बन चुकी है। नेता चुनाव के समय जनता के बीच मसीहा बनकर आते हैं, वादों की झड़ी लगाते हैं, लेकिन जीतने के बाद जनता की समस्याओं से मुँह मोड़ लेते हैं। उनके उपन्यासों में चुनावी भ्रष्टाचार, मतदाताओं को धन, शराब और वस्तुओं से प्रभावित करने जैसी प्रवृत्तियाँ साफ दिखाई देती हैं। जायसवाल जी दिखाते हैं कि ग्रामीण राजनीति सामंती ढाँचे और जातिगत संरचना से गहराई से जुड़ी है। प्रभावशाली नेता गरीब और कमजोर वर्गों को नियंत्रित करके सत्ता पर अपनी पकड़ बनाए रखते

[17] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'सात फेरे' पृष्ठ संख्या- **422194**

[18] चन्द्रकिशोर जायसवाल- 'पलटनिया', पृष्ठ संख्या- **42,** रचनाकार प्रकाशन, पूर्णिया, प्रथम संस्करण: **2007**

© Copyright @ Authors

हैं। इस प्रकार चन्द्रकिशोर जायसवाल का उपन्यास 'जीबछ का बेटा बुद्ध', 'सातफेरे', 'पलटनिया', 'शीर्षक' आदि आज की राजनीति का आईना है, जो चेतावनी देता है कि यदि राजनीति जनसेवा के मार्ग पर न लौटी तो समाज का भविष्य अंधकारमय होगा।

निष्कर्ष :–

अंततः हम कह सकते हैं कि आज की राजनीति समाज में विभाजन और वर्ग संघर्ष को बढ़ावा देती है। चुनाव केवल औपचारिकता रह जाते हैं, जहाँ असली मकसद जनकल्याण नहीं बल्कि व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा और सत्ता हासिल करना होता है। उनके उपन्यासों में राजनीति और समाज में महिलाओं की स्थिति भी उजागर होती है। महिलाएँ सत्ता के खेल में केवल वस्तु की तरह इस्तेमाल होती हैं, जो राजनीति में व्याप्त लैंगिक असमानता और शोषण की सच्चाई को सामने लाता है। इसके साथ ही राजनीति, अपराध और पुलिस का गठजोड़ समाज को भय, हिंसा और असुरक्षा की ओर धकेल देता है। लेखक स्पष्ट करते हैं कि राजनीति ने गाँवों की एकता और सामूहिक शक्ति को तोड़ दिया है। विकास की ताकतें टकराव और विभाजन में बदल गई हैं, जिससे नैतिक पतन और सामाजिक असंतोष बढ़ रहा है। इसीलिए आज यह व्यवस्था तभी बदलेगी, जब हम सभी अपने मत का प्रयोग सोच-समझकर करेंगे, किसी के भी झाँसे में नहीं आएँगे और एक ईमानदार, समाजसेवी तथा कर्तव्यनिष्ठ नेता का चयन करेंगे। हालाँकि आजकल सभी नेता स्वयं को ईमानदार, समाजसेवी और कर्तव्यनिष्ठ बताते हैं। वे एक से बढ़कर एक बैनर, पोस्टर और सोशल मीडिया जैसे माध्यमों से प्रचार-प्रसार करते हैं और लोगों का विश्वास जीतने का प्रयास करते हैं। लेकिन हमें उनकी भावनाओं में नहीं बहना है, अपने विवेक से काम लेकर सही निर्णय लेना है और अपने मत सही व्यक्ति के पक्ष में करना है।

© Copyright @ Authors